

सत री संगत के माही मुख नही जावे रे भजन लिरिक्स



सत री संगत के माही,
मुख नही जावे रे।

दोहा – एक घडी आधी घडी,
आधी में पुनि आध,
तुलसी संगत साध की,
कटे कोटि अपराध।

सत री संगत के माही,
मुख नही जावे रे,
हीरो सो जन्म गंवा,
फेर पछतावे रे।bd।

जे आवे इण माही,
तो पार हो जावे रे,
आ संता री नाव,
बैठ तीर जावे रे।bd।

या सतसंग गंगा,
ज्यो कोई नर न्हावे रे,
मन श्रुति काया,
निर्मल हो जावे रे।bd।

मानसरोवर सतसंग,
ज्यो कोई नर आवे रे,
चुग-चुग मोती खा,
हंस हरसावे रे।bd।

नीज रा प्याला पी,
अमर हो जावे रे,
नशो रहे दिन रात,
काल नही खावे रे।bd।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>



सहीराम गुरू पा,
सतलोक दर्शावे रे,
जावे कबीरो उण धाम,
फेर नही आवे रे।bd।

सत री संगत क माही,
मुख नही जावे रे,
हीरो सो जन्म गंवा,
फेर पछतावे रे।bd।

गायक / प्रेषक – साँवरिया निवाई।
7014827014
